सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका सार

*डॉ. पूनम जोशी

परिवर्तन एक शाश्वत् सत्य है। वर्तमान दौर में पश्चिमीकरण आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण विश्व को एक 'वैश्विक गांव' के रूप में रूपान्तरित कर दिया है। रूपान्तरण की इस प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। आज सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व का ये मूलाधार है। मीडिया सिर्फ संचार नहीं वह सर्जक भी है यह उपकरण या माध्यम ही नहीं बल्कि परिवर्तन का अस्त्र भी है। यदि किसी विचार, व्यक्ति, राजनीतिक, संस्कृति, मूल्यों या संस्कारों को बदलना है तो मीडिया के बिना यह कार्य संभव नहीं है। इसके बिना कोई भी विमर्श, अनुष्ठान, संदेश कार्यक्रम अंतःविरोध फीका लगता है। ये अस्त्र समाज की सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है – प्रस्तुत लेख में सामाजिक – सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रहा है का विश्लेषण है।

संकेत शब्दः सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, जनसंचार–स्रोत, भूमिका

''परिवर्तन का तात्पर्य किसी वस्तु अथवा घटना में समय के अन्तराल के साथ होने वाले अन्तर से ही नहीं, अपितु इसमें गति, संशोधन तथा रूपान्तरण का भाव भी सम्मिलित होता है। किसी समाज की सामाजिक संरचना (सामाजिक सम्बन्धों का तानाबाना) अथवा सामाजिक संगठन (संस्थानों और सामाजिक भूमिकाओं) अथवा समाज के अन्य उपादानों में समय अन्तराल के साथ होने वाले बदलाव और परिष्करण की प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं वही किसी समाज में व्याप्त विचारों मूल्यों परम्पराओं में आने वाले बदलाव को सांस्कृतिक परिवर्तन कहा जाता है।''1

इक्कीसवीं सदी संचार की जन्मदात्री बनकर उभरी है। उसने संचार साधनों के अनेक प्रतिरूप हमारे सामने उपलब्ध करा दिए हैं। एक युग था जब संचार के सीमित साधन थे। आज जनसंचार के आधुनिक साधनों ने विश्व की सीमाएं लांघकर अन्तरिक्ष में प्रवेश कर लिया है। शिक्षा एवं विज्ञान के विकास से मानव ने प्रकृति में व्याप्त विद्युत तरंगे एवं अन्य स्रोतों की अपार शक्ति को खोजकर संचार माध्यमों की जादू नगरी का निर्माण कर दिया है। कृषि हो अथवा उद्योग शिक्षा हो अथवा मनोरंजन चिकित्सा हो अथवा विज्ञान हर क्षेत्र में जनसंचार माध्यम का प्रबंधन एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा है। उसने हमारी जीवन दिशा ही बदल कर दख दी है। वर्तमान में मानव ने प्रौद्योगिकी के नये आयाम खोज निकाले हैं और स्थिति यह है कि उद्योग हो अथवा कोई भी महत्वपूर्ण योजना, चिकित्सा का क्षेत्र हो अथवा मनोरंजन की दुनिया, जनसंचार के अभाव में उसके अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

संचार माध्यम जहां लोगों तक दैनिक जीवन की घटनाओं को पहुंचाते हैं वहीं दूसरी ओर ये मनोरंजन का कार्य भी करते हैं। अधिकांश टेलीविजन चैनल लोगों का पर्याप्त मनोरंजन करके मुनाफा कमाते हैं। सूचनाओं का संग्रहण और प्रेषण में इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों और संचार उपग्रहों के उपयोग से संचार जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ जिसे संचार क्रांति का नाम दिया गया। विश्वभर में फैले हुए व्यापक और जटिल संचार तंत्र मानव शरीर के स्नायुतंत्र की भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से दूर–दूर फैले महाद्वीपों में अलग–अलग परिस्थितियों और वातावरण में रह रहे करोड़ों अरबों लोग निकटता से आबद्ध हो गए हैं। लोगों तक विश्व, राष्ट्र व समाज की महत्वपूर्ण जानकारियां व समाज के बदलते परिवेश की जानकारी भी इन्हीं टेलिविजन चैनल्स, न्यूज चैनल्स के माध्यम से पहुंचती है। मीडिया/जनसंचार का स्वरूप आज

इतना व्यापक हो चुका है कि आज ये हमारे जीवन के साथ गहराई से जुड़ा है। वर्तमान में समाज के प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक वर्ग में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है इसलिए यदि आज के समाज को 'मीडिया समाज' कहा जाए तो गलत न होगा।

संचार या सम्प्रेषण का अर्थ है किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को अपने विचारों या किसी सूचना का प्रेषण। जब एक ही स्थान से बहुत से लोगों को एक साथ सम्बोधित किया जाए तो उसे जनसंचार कहा जाता है। आधुनिक युग में यांत्रिक साधनों के द्वारा अब यह संभव हो सका है कि एक साथ यांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से बहुत से लोगों को एक साथ सम्बोधित किया जाए अर्थात् संचार व्यवस्था के दो मूल होते हैं। एक जो प्रेषण करता है और दूसरा जो प्राप्त करता है। यह आवश्यक नहीं कि दोनों स्रोतों के बीच कोई संवाद हो और यह भी संभव है कि प्रेषण और प्रेषण प्राप्त करने वालों के बीच आमने सामने का संबंध हो। इस प्रकार की संचार व्यवस्था के लिए जो साधन प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें मीडिया कहा जाता है।

मार्शल मेक्लूहान मीडिया की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि ''मीडिया का अर्थ मध्यस्थता करने वाला होता है जो दो बिन्दुओं को आपस में जोड़ने का कार्य करता है व्यावहारिक दृष्टि से जनसंचार एक ऐसा सेतु है जो विभिन्न समूह के श्रोताओं को एक विचारधारा में जोड़ता है।''2 मीडिया पठ्य भी हो सकते हैं, श्रव्य भी और दृश्य भी। समाचार पत्र, पत्रिकाऐं पठ्य साधन हैं। सिनेमा टेलीविजन दृश्य तथा रेडियो श्रव्य साधन। आज की सोशल मीडिया सम्मिलित साधन हैं। यह द्रुत भी है और संवादों को तेजी से फैलाने में नया साधन। इस साधन में प्रतिक्रिया बहुत तेजी से दी जा सकती है। इस प्रश्न पर विचार किया जा सकता है कि समाज के विभिन्न संदर्भों में इसकी क्या भूमिका हो सकती है। यह तथ्य इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आज की दुनिया में सूचनाओं का अपना महत्व है। न्छम्ैब्व की अपनी रिपोर्ट डंदल अवपबमे वदम्.वतसक ;1955द्ध में उन 'भूमिकाओं की चर्चा की गई है जो आज की दुनिया में सामान्य जीवन में बहुत काम आती है।'3 यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि आखिर इस सूचना समाज में सूचना के इस प्रदाय की आवश्यकता क्या है? निश्चित ही इस सूचना प्रदाय के कई अर्थ हैं। ज्ञान की प्राप्ति समााजिक दशाओं का परिचय, सरकार द्वारा किये गये कार्यों के संबंध में सूचनाओं का प्रवाह, समस्याओं पर बहस, सूचनाओं का बाधा रहित प्रवाह। सूचना के ये प्रवाह विभिन्न राष्ट्रों और विभिन्न समाजों में एक–दूसरे के बीच संभव है इसलिए आज विश्व के विभिन्न समाजों के बीच संविदा स्थापित करना आसान हो गया है।

मीडिया एवं समाज

''संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या समूह अपनी भावना एवं संवेग को अन्य व्यक्ति या समूह तक एक ऐसी सक्षमता से पहुंचाए ताकि वे उसको समझकर या ग्रहणकर अपनी प्रतिक्रिया का बोध दिला सके।''4

आज से हजारों वर्ष पूर्व जब वर्णमाला या भाषा का विकास नहीं हुआ था तब आदिम युग से ही मनुष्य अपने अन्य साथियों से अपनी संवेदनाओं, विचारों और धारणाओं की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार के संकेतों व प्रतीकों द्वारा करता रहा है। इन प्रतीकों से व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह परिचित था। इसलिए संप्रेषित संवेदनाओं, विचारों एवं धारणाओं का अर्थ वे तुरन्त समझ लेते थे। तब संचार साधन सीमित थे। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण अपने सुख–दुख दूसरों से बांटता है, उसे अपने ही लोगों में रहना अच्छा लगता है। समाज में रहकर वह अपना विकास करता है। उसके पास मस्तिष्क है वह संकेतों प्रतीकों एवं ध्वनि से संतुष्ट नहीं रहा। उसने अपने क्षेत्र में रहकर अपने ही लोगों के बीच संचार के माध्यम के लिए भाषा का विकास किया तथा उसके लिए वर्णमाला निर्मित की। उनको वह स्वयं समझता और जानता था अर्थात् भाषा संचार के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर आई। भाषा ने संचार और जनसंचार को एक नया आयाम दिया। जनसंचार के विभिन्न साधनों ने संचार के क्षेत्र में एक नई क्रांति पैदा की। डाक एवं तार विभाग की स्थापना से संचार एवं जनसंचार को नई दिशा मिली। आज सिनेमा, रेडियो टेलीविजन, इन्टरनेट जैसे माध्यमों के आविष्कार ने जनसंचार के क्षेत्र को असीमित विस्तार दिया है। संचार माध्यमों को तीन भागों में बांटा जा सकता है। पहला परम्परागत

माध्यम जिसमें मेले, तीज त्यौहार, मांडणे, जन्म–मरण के गीत, भजन–कीर्तनों का समावेश था दूसरा माध्यम मुद्रित माध्यम जिसे प्रिंट मीडिया भी कहते हैं इसके अन्तर्गत हस्तलिखित अथवा यांत्रिक मुद्रण हुई सामग्री का समावेश होता है तथा इसके अन्तर्गत समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं मुख्य रूप से शामिल की जाती हैं। तीसरा माध्यम विद्युतसंचालित माध्यम अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। यह माध्यम श्रव्य व दृश्य दोनों में उपयोगी है। इस माध्यम की पहुंच असीमित है। इसके अन्तर्गत टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, मोबाइल इत्यादि को शामिल किया जाता है।

जनसंचार जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है जन के लिए संचार के माध्यम जनसंचार के इस माध्यमों का प्रभाव लोगों के जीवन पर जितना पड़ता है। खुद जनता का इन माध्यमों पर उससे कम प्रभाव नहीं पड़ता। मीडिया व समाज के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या के सम्बन्ध में डॉ. एस.सी. दुबे लिखते हैं कि ''मनुष्य जैवकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी तब बनता है जब वह संचार द्वारा सांस्कृतिक अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहारों तथा प्रकारों को आत्मसात कर लेता है।''5

समाजशास्त्री कॉर्लमैनहीन ने आधुनिक समाज को ''मॉस सोसाइटी'' कहा उनके मतानुसार ''मॉस सोसाइटी'' वह समाज है जिसकी प्रमुख विशेषताएं हैं... तार्किकता, अव्यैक्तिक संबंध, कार्यों का स्तरीय विशेषीकरण, जनसंख्या के केन्द्रीयकरण के बावजूद व्यक्ति का अकेलापन, घनिष्ठता और सुरक्षा की भावना में कमी। ऐसे समाजों में सुझाव, अनुनय, प्रयास और भीड़ व्यवहार के अन्य पहलु सामान्य होते हैं।''6

पूंजीवाद के उदय के साथ यूरोप के देशों में जिन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का आर्विभाव हुआ उसका गहरा संबंध जनसंचार के आधुनिक माध्यमों के उदय से है। डेनियल लर्नर अपने पुस्तक 'द पॉसिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसाइटी' में लिखते हैं कि ''आधुनिकता की व्यवस्था ने मीडिया के माध्यम से लोगों के बीच प्रभावी तरीके से मानसिक गतिशीलता को विस्तार दिया है। अतः ये कहा जा सकता है कि कोई भी आधुनिक समाज मीडिया के विकास के बिना प्रभावशाली ढंग से काम नहीं कर पाता।''7 पूंजीवादी व्यवस्था के अस्तित्व में आने के बाद और विशेषतः पिछली दो सदियों में कई संचार माध्यम विकसित हुए जो व्यापक जनसमूह को सम्बोधित करते हैं। मीडिया पर बातचीत तभी सार्थक हो सकती है जब हम उसके सामाजिक संदर्भों को हर समय ध्यान में रखें। मीडिया का सम्बन्ध सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया से बहुत गहरा है।

सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन एवं मीडिया

सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य सामाजिक घटना है लेकिन इसकी गति प्रत्येक समाज में समरूप नहीं होती है। जहां कॉर्ल मार्क्स आर्थिक कारकों को, मैक्सवेबर धार्मिक कारकों को, सोरोकिन सांस्कृतिक कारकों को सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी मानते हैं वहीं आधुनिक समाज वैज्ञानिकों के मत में मानवीय विवेक द्वारा चेतन और सुव्यवस्थित प्रयत्नों द्वारा परिवर्तन किया जा सकता है रेमंड विलियम्स, गौड फेबेस्ले, पाउलोफेयर, डेनियल लर्नर इत्यादि ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका पर विचार किया।

समाज वैज्ञानिक आग्बर्न के मत में ''प्रौद्योगिकी समाज के पर्यावरण में परिवर्तन द्वारा जिसके प्रति हमें अनुकूलित होना पड़ता है बदलती है यह परिवर्तन प्रायः भौतिक पर्यावरण में पहले–पहल आता है। हम इन परिवर्तनों के साथ जो अनुकूलन करते हैं उससे प्रथाओं तथा सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन हो जाता है।''8 यह तथ्य मीडिया पर भी लागू होता है। इस कारण मीडिया ने सामाजिक संबंधों में अनेक परिवर्तन उत्पन्न कर सामाजिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। अपनी इस विजय यात्रा में मीडिया ने देशों की भौगोलिक राजनैतिक व सांस्कृतिक सीमाओं को भी समेट दिया है। इसके कारण खान–पान, वेशभूषा, रहन–सहन तथा जीवन शैली पर प्रभाव पड़ा है। लोकतंत्र मताधिकार, स्त्री शिक्षा का प्रसार, बंधुआ मजदूरी की समाप्ति, कुरीतियों, अंधविश्वासों के उन्मूलन में आधुनिक मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मूर ने मीडिया को सामाजिक परिवर्तन के अभिकरण के रूप में देखा। वे लिखते हैं कि ''समाज में मीडिया जो परिवर्तन ला रहा है वह हमारे परिवार, सामाजिक सम्बन्धों और राष्ट्र के प्रति सोच का प्रतिनिधित्व कर रहा है।''9

मीडिया के अलग–अलग रूपों का प्रभाव समाज के अलग–अलग वर्गों पर एक सा नहीं पड़ता। आज मीडिया का प्रभाव

इतना व्यापक और जबर्दस्त ढंग से दिखाई देता है कि उसकी उपेक्षा करना लगभग नामुमकिन है। वर्तमान समाज की संरचना और परिकल्पना आज मीडिया के आइने में दिखाई देती है। उदाहरण स्वरूप टेलीविजन को लेते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जो अपनी श्रव्य–दृश्य शक्ति के कारण एक साथ करोड़ो लोगों को प्रभावित करता है क्योंकि टेलीविजन के दृश्य माध्यम ने मनोरंजन को सुलभ बना दिया। इसकी जगह मनोरंजन के अन्य साधन की आवश्यकता नहीं रही। जब चाहे बटन दबाऐं और एक चैनल से दूसरे व दूसरे के तीसरे चैनल। वहीं इंटरनेट एक ओर द्रुत गति का माध्यम जिसमें प्रचलित फेसबुक, वॉट्सएप, टिविट्र, इन्सटाग्राम जैसे सोशल साइट्स ने एक नया इलेक्ट्रानिक माया जाल हमारे इर्द–गिर्द फैलाया है व्यक्ति के हर पल की जानकारी इन सोशल साईट्स पर उपलब्ध है। अब हालात यह हो गए हैं कि यह मीडिया ही हमें हमारी दिनचर्या को नियंत्रित करने लगा है। सुबह आंख खुलने से देर रात्रि तक की दिनचर्या में मीडिया की घुसपैठ इस तरह से हो गई है कि हमारी दिनचर्या की नियंत्रण की शक्ति का रिमोट इसके पास चला गया है। इक्कीसवीं शताब्दी के इन दिनों में जब हम मीडिया का वर्तमान दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि मीडिया के ये साधन व्यक्ति के लिए केवल मनोरंजन के साधन ही नहीं एक तरह का नशा भी है जो उसे रोमानी फैंटसी के क्षणों में ले जाता है जिसमें वह अपने ड्रांइग रूम में बैठकर डूबा रहता है। इस सम्बन्ध में हेबर मॉस कहते हैं कि ''हम अपनी रोजमर्रा की दुनिया को संचार क्रिया द्वारा ही बनाते हैं वे कहते हैं कि संचार क्रिया को बदल दीजिए समाज बदल जाएगा।''10 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब मीडिया के तमाम बिन्दु समाज के परिवर्तित हुए सरोकारों से जुड़ गए हैं तो समय आ गया है कि उन बिन्दुओं पर भी ध्यान दिया जाए जिसके द्वारा इन माध्यमों का सामाजिक दायित्व कहीं संचार के लोकतंत्रीकरण में एक वर्ग विशेष के लिए ही महफूज न हो जाए।

''भूमण्डलीकरण तथा बाजारीकरण में मीडिया के अर्थ बदल गए हैं आज मीडिया के इस बदलाव में उपभोक्तावादी संस्कृति तथा बाजार प्रमुख तत्व है जिनके सहारे प्रसारण तथा संचार माध्यम अपनी साख का एक स्रोत देख सकते हैं इस तरह के बदल रहे सामाजिक परिदृश्य से आने वाले दिनों में अनेक सामाजिक परिवर्तनों की उम्मीद की जा सकती है।''11

निष्कर्ष

मीडिया तथा सामाजिक जीवन के बीच गहरा सम्बन्ध बनता जा रहा है। गिडन्स के अनुसार ''आधुनिक समाज में जनसंचार के साधन मूलभूत भमिका निभाते हैं, समाचार पत्र, पत्रिकाऐं, टेलीविजन, रेडियों सिनेमा, इंटरनेट (सोशल साईट्स) इत्यादि जो वृहद् जन तक पहुंचने में सक्षम है उनका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।''12 मीडिया की भूमिका सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में कई परिप्रेक्ष्यों में दृष्टिगत होती जा रही है। आज मीडिया समाजीकरण का माध्यम बनता जा रहा है। इसमें प्रचारित प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों ने व्यक्ति की ना केवल सोच में परिवर्तन किया है बल्कि उसकी जीवनशैली को भी प्रभावित कर रहा है। ये कार्यक्रम एक ओर सामाजिक जागरूकता लाकर शिक्षा, स्वस्थ समाज की अवधारणा समाज में उत्पन्न कर रहे हैं वहीं पर इन्हीं कार्यक्रमों में प्रचारित विवाहेत्तर सम्बन्धी कार्यक्रम, षड़यंत्रकारी कार्यक्रम, कानून भंजन व हिंसा के कार्यक्रम जो परम्परागत मूल्यों और मान्यताओं को अनैतिकता और अपरिहपार्य रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। समाज में मीडिया जो परिवर्तन ला रहा है वह हमारे परिवार, सामाजिक सम्बन्धों और राष्ट्र के प्रति किस प्रकार के सोच का प्रतिनिधित्व करता है इस पर गंभीरता से विचार करना होगा। इंटरनेट (सोशल साईट्स) व्यक्ति की जीवनशैली और व्यक्तित्व को बदल रहा है। ये एक ऐसे समाज की रचना कर रहा है जहां सब कुछ खुला है बाजार की तरह आप कहीं भी रहें इंटरनेट आपके साथ रहेगा। आप जब चाहें अपने दोस्तों, सम्बन्धियों और यहां तक कि अपने विवाह सम्बन्धी चर्चा भी कर सकते हैं। शादियां अब इंटरनेट पर तय होने लगी। इस तरह मीडिया ने सूचना का व्यावसायीकरण कर दिया है। समाज को अपने मोहक जाल में समा लिया है।

व्याख्याता
एस.एस. जैन सुबोध महिला महाविद्यालय, जयपुर

संदर्भ सूची :

1. रावत, हरिकृष्ण, (2006). उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश : रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
2. McLuhan, Marshall, (1964). Understanding Media: The extension of Man: McGraw Hill, Critical Edition Gingko Press.
3. UNESCO, (1955). Many Voices One World, New York. UNESCO
4. चौपड़ा, लक्ष्मेंद्रा, (2002). जनसंचार का समाजशास्त्र : आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला
5. दुबे, श्यामचरण, (1986). संचार और विकास प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
6. Basu. Narendra (2007). Mass Media and Contemporary Social Issues: Commonwealth Publishers, Delhi.
7. Singh Jitendra (2008). Media and Society: Sumit Enterprises, New Delhi.
8. शर्मा, डॉ. राकेश, (2000). संचार एवं सामाजिक परिवर्तन : आदित्य पब्लिशर्स, बीना (मध्यप्रदेश)
9. Moore. W.E., (1965). Social Change: Prentice Hall of India, New Delhi
10. दोषी, एस.एल., (2010). आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक : रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
11. शर्मा, कुमुद, (2003). भूमण्डलीकरण और मीडिया : ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली
12. Giddens, Anthony, (2001). Sociology. London: Polity Press.